Bheem

17-6-67 ओम शान्तिः प्रातः क्लास

अब बाप को बच्चों को रोज-2 बोलने की दरकार नही रहती है कि अपने को आत्मा समझ अथवा देहीअभिमानी भव। अक्षर है तो सही ना। बाप कहते है अपने को आत्मा समझो। आत्मा मे ह 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। एक शरीर लेकर पार्ट बजाया फिर शरीर खलास हो जाता है। आत्मा तो अविनाशी है। तुम बच्चों को यह ज्ञान अब ही मिलता है। और कोई को इन बातो का पता नही है। अब बाप कहते है कोशिश कर जितना हो सके बाप को याद करो। धन्धे आदि मे लग जाने पर तो इतनी याद नही ठहरती है। गृहस्थ और व्यवहार मे रह भी मुझे याद करना है फिर जितना हो सके पवित्र बनना है। ऐसे नही कि हमको दृष्टि मे बिठाओ। ऐसा अक्षर भी रांग है। वास्तव मे है ही याद। माया के तूफान तो बहुत आवेंगे। कोई की क्या याद आवेगा कोई की क्या। तूफान आवेंगे जरूर फिर उस समय उनको हटाना पड़ता है। यहां पर बैठे-2 भी माया बहुत तंग करती है। यही तो युध है। जितना हल्का होगा उतना बन्धन कम होगें। क्योंकि बन्धन बहुत बढ़ते गये है ना। पहले तो निरबन्धन थे। फिर स्त्री को ऐडाप्ट करते है तो जो चीज माया का रूप सामने नही थी वो सामने आ गई। फिर बच्चे पैदा हो गये तो उनकी याद बढ़ेगी। अब तुम सबको यह भूल जाना है। एक बाप को ही याद करना है। इसलिये ही बाप की महिमा है। तुम्हारा मात-पिता आद सब कुछ वो ही है। उनको ही सब कुछ समझो। वो तुमको भविष्य के लिये सब कुछ देते है। नये सम्बन्ध मे ले जाते है। सम्बन्ध तो वहां पर भी होगा ही नां। ऐसे तो नही कि कोई प्रलय हो जाती है। तुम एक शरीर छोड कर फिर दुसरा लेते हो। जो बच्चे बहुत अच्छे-2 है वो जरूर ऊंचे कुल मे जन्म लेगें। तुम तो पढ़ते ही हो भविष्य 21 जन्मों के लिये। पढाई पुरी हुई और प्रारब्ध शुरू हुई। स्कूलस मे भी पहले पढ़ कर फिर ट्रान्सफर होते है नां। तुम भी ट्रान्सफर होने वाले हो शान्तिः धाम के लिये। सुख धाम के लिये। इस छी-छी दुनियां से छूट जावेंगे। इसका नाम ही है नर्क। सतयुग को कहा जाता स्वर्ग। यहां मनुष्य कितने घोर अन्धेरे मे है। धनवान जो है वो समझते है कि हमारे लिये तो यहां पर ही स्वर्ग है। स्वर्ग होता ही है नई दुनियां मे। यह पुरानी दुनियां तो खत्म हो जानी है। जो कर्मातीत अवस्था वाले है वो कोई गर्भ मे सजा थोड़े ही खायेंगे। स्वर्ग मे तो सजाये होगी ही नही। वहां पर तो गर्भ भी महल रहता है। कोई दुःख की बात नही। यहां पर तो गर्भ भी जेल है। जो कि सजाये खाते रहते है। इनका तो नाम ही स्वर्ग है। तुम कितनी बार स्वर्गवासी हुये हो? यही याद करे तो भी सारा चक्र याद रहे। एक-एक बात लाखों-2 रुपयों की है। यही भूल जाने पर देहअभिमान मे आने पर माया नुकसान कर देती है। मेहनत है। मेहनत बिगर ऊंच पद पा ही नही सकते। बाबा को कहते है बाबा हम तो अणपढे है। कुछ नही जानते है। बाबा को खुशी होती है। क्योंकि यहां तो पढा हुआ सब कुछ भुलाना होता है। देह सहित सब कुछ भूलो। बाकी शास्त्र आद सबको भूलना है। यह तो थोड़े समय लिये शरीर निर्वाह लिये पढ़ना होता है। जानते तो हो नां कि यह सब कुछ खलास होने का है। जितना हो सके बाप को याद करो और रोटी टुकर खुशी से खाना है। वाह-वाह है गारिबी इस समय की। आराम से रोटी टुकर खाना है। हबच नही। आजकल तो अनाज मिलता ही कहां है। चीनी आद भी धीरे-2 करके मिलेगी ही नही। ऐसे नही कि तुम ईश्वरिय सर्विस करते हो तो गवर्मेन्ट तुमको यूं ही दे देगी। वो तो कुछ भी जानते नही है। यहां बच्चो को समझाया जाता है कि तुम सब मिल कर गवर्मेन्ट पास जाओ कहो कि हम सब मिल कर मां बाप पास जाते है। उनको भजनी होती है। यहां पर तुम सिर्फ कह देते हो कि है ही नही। लाचारी थोडी सी दे देते है। जैसे कोई फकीर को शाहुकार लोग मुठी भर कर दे देते है। गरीब होगा तो थोडा बहुत दे देगें। चीनी आद आ सकती है परन्तु बच्चो का योग कम है। याद मे नां रहने कारण देहअभिमान आता रहने कारण कोई भी काम पुरा नही हो पाता है। पढाई से भी उतना नही जितना योग से होगा। वो ही बहुत कम है। माया याद भी उड़ा देती है। ... को तो और ही अच्छी रीति पकड़ती है। अच्छे-2

फस्ट क्लास बच्चो पर ग्रहचारी बेठती है। योग नही होता है तो नाम रुप मे फंस पड़ते है। यह बड़ी मंजिल है। अगर सच्ची मंजिल पानी है तो याद मे बहुत रहना होगा। बाप तो कहते है कि ध्यान से भी ज्ञान अच्छा। ज्ञान से फिर याद अच्छी। ध्यान मे जास्ती जाने पर भूतो की प्रवेशता हो जाती है। ऐसे बहुत है जो फालतु ध्यान मे जाते है। ध्यान-2 बोलते रहते है। उन पर विश्वास नही करना होता है। ज्ञान तो बाबा की मुरली मे मिलता ही रहता है। बाप तो चेलेंज देते रहते है कि ध्यान कोई काम का नही है। बहुत माया की प्रवेशता हो जाती है। अंहकार आ जाता है। ज्ञान तो सबको मिलता रहता है। ज्ञान देने वाला शिव बाबा है। मम्मा को भी तो यहां से ही ज्ञान मिलता था नां। मम्मा भी आकर क्या करेगी। कहेगी मनमनाभव। देवी गुण धारनकरो। अपने को देखना है कि हम देवी गुण धारण करते है। यही देवी गुण धारन करने है। कोई को देखो तो अभी ही बड़ी फस्ट क्लास अवस्था है। खुशी-2 से काम करते है। घण्टे बाद ह देखो तो तो भूत आ गया। खत्म। फिर स्मृती आती है। हमने तो यह भूल की। फिर सुधर जाते है। घड़ी-2 का घड़ियाल बाबा के पास बहुत है। अभी ही देखो तो बहुत मीठा। दबाबा कहेंगे मै तो ऐसे बच्चे पर कुरबान जाऊ। घण्टे बाद ही फिर कोई नां कोई बात मे बिगर पड़ते है। डण्खवण है नां। क्रोध आया तो सारी की कमाई कमाई खतम हो गई। अभी-2 कमाई तो अभी-2 घाटा हो जाता है। सारा मदार याद पर ही है। ज्ञान तो बड़ा सहज है। छोटा बच्चा भी समझ लेवे। परन्तु मै जो हूं जैसा हूं यथार्थ रीती मुझे जाने अपने को आत्मा समझे। उस रीती बच्चे थोड़ेई याद कर सकेंगे। मनुष्यों को मरते समय कहा जाता है कि भगवान को याद करो। परन्तु याद कर नही सकते। भक्ति मार्ग मे कोई भी भगवान को जानते ही नही है। कोई भी नां वापस जा सकते है नां विकर्म विनाश हो सकते है। परमपरास से ऋषि मुनी आद कहते है आते है कि हम नही जानते-नहीं जानते है। वो तो फिर भी सतोगुणी थे। फिर आज की तमोप्रधान बुधियां कैसे जान सकती है। बाप कहते है कि यह लक्ष्मी-नारायण भी नही जानते है। राजा-रानी ही नही जानते है तो फिर प्रजा कैसे जानेगी। कोई भी नही जानते है। अभी सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। तुम्हारे मे भी कोई-2 है जो यथार्थ रीती जानते है। कहते है बाबा बार-2 भूल जाते है। बाप कहते है कि कहीं भी जाओ सिर्फ बाप को याद करो। बड़ी भारी कमाई है। तुम 21 जन्मों लिये निरोगी बनते हो। ऐसे बाप को अन्तरमुखी होकर याद करना चाहिये नां। परन्तु माया भुला कर तूफान मे ला देती है। इसमे अन्तरमुखी हो विचार सागर मथन करना है। विचार सागर मथन करने की बाते भी अभी की है। यह है पुरषोतम बनने का युग। यह भी वण्डर तुम बच्चो ने देखा है कि एक ही घर मे तुम समझते हो कि हम तो संगमयुगी है। हाफपार्टनर वां बच्चा आद कलियुगी है। कितना फर्क है। बहुत महीन बाते बाप समझाते है। घर मे रहते हुये भी बुधी मे यही रहे कि हम संगम युगवासी है। बाकी और सारे चाचा मामा काका आद सारे कलयुगी है। वो कांटे है। हम तो फूल बनने लिये पुरषार्थ कर रहे है। यह है अनुभव की बाते। प्रैक्टीकल मे मेहनत करनी है। याद की ही मेहनत है। एक ही घर मे एक हंस तो दुसरा बगुला। कोई तो फिर बड़े फस्ट क्लास भी होते है। अभी एक जोड़ी का स्वयम्वर हुआ। बाबा ने तो पहली बार ही ऐसा देखा। आपस मे झांकी भी नही पहनी। जैसे वाजू मे कोई सोते है। यां तो कहते थे कि अलग जाकर सोवे! शुरु से लेकर हां कितनी हित्तम दिखाई है। कमाल है नां। ऐसे ही चलते रहे तो कितना ऊंचा पद पायेंगे। ऐसे भी बच्चे तो है नां। कोई तो देखो विकार के लिये कितना मारते झगड़ा करते है। अवस्था तो वो होनी चाहिये। भाई-बहन है नां! तो इकठे सोना ही क्यो चाहिये। बाप हर प्रकार से राय देते रहते है। तुम जानते हो कि श्री-श्री की मत से हम श्रीनारायण बनते है। श्री माना ही श्रेष्ट। सतयुग मे ही नम्बर वन श्रेष्ट त्रेता मे दो डिग्रीफिर कम हो जाती है। यह ज्ञान तो बच्चो को अब मिलता है। तुम्हारे मे कोई समझते नही है। कोई तो यहां पर बैठे हुये भी झपकी,

खाते उबासी लेते रहते है। उनको तो पिछाडी मे जाकर बैठना चाहिये। यह ईश्वरिय सभी है बच्चो की। परन्तु कई आदमी ऐसे-2 को भी ले आतीहै। यह तो बाप ने धन दिया है हमको ऐसे-2 कमाना लाखो रुपये का है। वेद गीता शास्त्र आद पढते-2 आज कोई धाईकार करोडपति बन गये। और वे कंगाल बने है। है की शक्ति कहां बस नो राज्य तो उनको देखो कितना भभका है। शास्त्र पढने वाले ही दुनियां को पाने है। सिर्फ अपने पेट के लिये कमाई करनी होती है। सन्यासी लोग तो देखो कितनी बडी-2 फ्लेट बनाते है। नही तो सन्यासियों को भक्ति करने का हुक्म नही है। उनको तो है ही निवृती मार्ग। यह है प्रवृती मार्ग। भक्ति है दुर्गति मार्ग। वो है ह प्रवृती मार्गवालो के लिये। भक्ति का फल भगवान ही देते है तुम बच्चो को। तुम हैर पवित्र प्रवृती मार्गवाले। जो फिर ही फिर अपवित्र हुई है। वो ही फिर अपवित्र बने है। सन्यासियों का धर्म ही अलग है। उनको ह तुमेन गुर बना लिया है। उनसे भला क्या मिलगा? कुछ भी नही। हठ योगी क्या सिद्ध सिखाते है। कुछ नां कुछ हठ योग सिखा कर अपनी कमाई कर लेते है। अनेक प्रकार की भूत विद्यायें भी है। क्या-2 निकलते है। यह भी कोई ज्ञान है क्या। ज्ञान मिलता ही संगम पर। तुम कहते हो बाबा हम आये है आपसे सतयुग का वर्सा लेने। बाकी मनुष्य जो अपने को भगवान कहते है तो वो चोर हुये नां। कितने बडे-2 टाईटल देते है। श्री श्री 108। 16/08 तो माला होती है। बस। बाकी और मालायें गाई नही जाती। रुद्र माला और रुंड माला। और तुम नम्बरवार विष्णु की माला बनो। मीठे-2 बच्चो को बाप बार-2 समझाते है कि बच्चे यह सारी छी-छी दुनियां है। तुम्हारा है बेहद का वैराग। सन्यासियों का है हद का वैराग। बाप कहते है इस दुनियां में तुम जो कुछ भी देखते हो वो कल होगा हो नही। मन्दिरों आद का तो नाम निशान भी नही रहेगा। वहां उनको पुरानी चीजे देखने की दरकार ही नही। यहां तो पुरानी चीज का कितना मेला है। वास्तव मे कोई चीज का मेला नही है सिवाय एक बाप कें। बाप कहते है मै नही आऊं तो तुम राजाई कहां से लो? जिकनेपता पडा है वो ही बाप से आकर लेते है। इसलिये ही कोटो मे कोउ कहा जाता है। कोई भी बातमे संशय नही आना चाहिये। भोग आद का भी रस्म रिवाज है। इनसे ज्ञान और याद का कोई कनेक्शन नही है। और कोई बात की तकलीफनही। सिर्फ दो बाते है। अल्फ और बे बादशाही। बस। अल्फ भगवान को कहा जाता है। आखों से भी ऐसे ही ईशारा करते है। आत्मा ईशारा करतीहै। भगवान कहते है भक्ति मार्ग में तुम मुझे याद करते हो तुम सबमें आशिक हो। यह भी जानते हो कि बाबा कल्प-2 आकर सभी मनुष्य मात्र को दुःख से छुडा कर शान्ति और सुखधाम मे ले जाते है। तब बाबा ने कहा था कि विश्व मे शान्ति कैसे स्थापन होती है वो समझाना है। एक सेकिंड मे विश्व का मालिक 21जन्म लिये बनना है। तो आकर समझो। घर मे बोर्ड लगा दो। तीन पैर पृथ्वी पर तुम बडे ते बडा हास्पटल कम यूनिवरसिटी खोल सकते हो। हास्पिटल से 21जन्म लिये निरोगी। और पढाई से स्वर्ग की बादशाही मिल जाती है। प्रजा भी कहेगी कि हम स्वर्ग का मालिक है। आज मनुष्यों को जल्ला आती है क्योकि नर्कवासी है नां। खुद कहते है कि हमारा बाप स्वर्गवासी हुआ। तो खुद तो नर्क ही मे है नां। जब मरेगा तो फिर स्वर्ग मे जावेगा। यह तो बडी सहज बात सहज है। अच्छा काम करने वाले लिये तो सभी कहते है कि यह तो बडा महादानी था। यह स्वर्गवासी हुआ। परन्तु जाता तो कोई भी नही है। नाटक पुरा होता है तो सब स्टेज पर आ जाते है। यह लडाई भी तब लगेगी जब कि यह ऐक्टर्स यहां आकर खडे हुये होगें। फिर लोटेंगें। शिव की बारात कहते है नां। शिव बाबा के संग सब आत्मायें जावेगी। होल लाट। अब 84जन्म पुरे हुये अब इन जुत्ते को छोडना है। जो सांप पुरानी खल को छोड देता है। नई ले लेते है। तुम फिर नई खल सतयुग में लेंगें। श्री कृष्ण कितना सुन्दर है। कितनी उसमे कशिश है। फर्स्ट क्लास खल है उनकी। ऐसी ही हम भी लेंगें। कहते है नां तो फिर पर्दीय भी पुरा करना है। ओम